ICSSR Sponsored
ISSN: 2319-9997

Journal of Nehru Gram Bharati University, 2025; Vol. 14 (I):162-171

एकल एवं संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास का अध्ययन

सुनील कुमार सिंह एवं कृपा शंकर यादव
शिक्षक शिक्षा विभाग
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय). प्रयागराज
Email: su0200nil@gmail.com

Received: 18.03.2025 Revised:02.04.2025 Accepted: 23.04.2025

सारांश

''एकल एवं संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास का अध्ययन'' है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अर्न्तगत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रयागराज जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को समष्टि के रुप में सम्मिलित किया गया है। कुल 600 विद्यार्थियों को यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है, जिसमें से ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के 300 विद्यार्थियों तथा नगरीय माध्यमिक विद्यालयों के 300 विद्यार्थियों को चुना गया है। माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में नैतिक विकास का मापन करने के लिए शोधकर्ता द्वारा नैतिक विकास को मापने हेतु डॉ0 अल्पना सेन गुप्ता एवं डॉ0 अरून कुमार सिंह द्वारा निर्मित ''मोरल वैल्यू स्केल' का प्रयोग किया गया है। नैतिक मूल्य मापनी में कुल 36 प्रश्न दिये गये है एवं उन्हें चार खण्डों में विभक्त किया गया हैं-झूठ, बेइमानी, चोरी करना, धोखेबाजी। प्रत्येक खण्ड में 9 कथन दिये गये है एवं प्रत्येक कथन के लिए दो बिन्दु मापनी 'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर देना है।

एकल एवं संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात् दोनों परिवारों के मध्य विद्यार्थियों के नैतिक विकास में समानता है। ग्रामीण एकल एवं ग्रामीण संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास में अन्तर नहीं है। शहरी संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में नैतिक विकास शहरी एकल परिवार के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।

मुख्य शब्द *-एकल एवं संयुक्त परिवार, माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी, नैतिक विकास।*

प्रस्तावना-

''ज्ञानम तृतीयं मनुजस्य नेत्रम'' का स्पष्ट अभिप्राय है कि ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है अर्थात मनुष्य के विकास का वास्तविक पथ है। बालक जब जन्म लेता है तो उसका मस्तिष्क एक कोरी स्लेट के समान होता है और वह माता-पिता, परिवार और समाज के द्वारा शिक्षा प्राप्त करता

है। माता को बालक की प्रथम शिक्षिका माना जाता है। किंतु जीवन के अन्य क्षेत्रों में विकास के लिए उसे एक व्यवस्थित शिक्षा की आवश्यकता होती है, जो उसे विद्यालय में प्राप्त होती है। समय-समय पर शिक्षा के उद्देश्य परिवर्तित होते रहते हैं। प्राचीन भारत में शिक्षा ''सा विद्या या विमुक्ते'' अर्थात विद्या वह है जो मुक्ति प्रदान करें। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उस समय धर्म प्रधान शिक्षा दी जाती थी। किन्तु अन्य प्रकार की शिक्षा की उपेक्षा इसका कदापि अर्थ नहीं है।

परिवार और विद्यालय बच्चे के विकास में दो मुख्य स्तंभ हैं। दोनों अलग-अलग भूमिका निभाते हैं जो शैक्षिक प्रक्रिया में समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। परिवार बच्चे का प्राथमिक पाठशाला होती है जहाँ सीखने का माहौल मिलता है, यहीं पर मूल्यों, विश्वासों और शुरुआती व्यवहारों को आकार दिया जाता है। माता-पिता अपने बच्चों के पहले शिक्षक होते हैं और उनकी जिम्मेदारी है कि वे एक ऐसा उत्तेजक माहौल तैयार करें जो सीखने के लिए जिज्ञासा और जुनून को बढ़ावा दे। इसके अलावा, परिवार भावनात्मक समर्थन प्रदान करने और सामाजिक कौशल के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए जिम्मेदार है। इस प्रकार, परिवार को न केवल शिक्षित करना चाहिए बल्कि भावनात्मक और संज्ञानात्मक संबंधों को भी विकसित करना चाहिए। विद्यालय वह स्था होता है, जहाँ विद्यार्थियों को औपचारिक शिक्षा प्रदान की जाती है। विद्यालयी शिक्षा में शिक्षक ज्ञान साझा करने और शैक्षणिक कौशल को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विद्यालय आवश्यक सामग्री पढ़ाने, नए ज्ञान का परिचय देने और एक जटिल और तकनीकी दुनिया की तैयारी के रूप में कलात्मक या वैज्ञानिक कौशल विकसित करने के लिए कार्य करते हैं। अपनी शैक्षिक भूमिका के अलावा विद्यालय परिवार के साथ मिलकर आपसी साझेदारी स्थापित करते हैं, जिसमें माता-पिता की सक्रिय भागीदारी के महत्व पर प्रकाश डाला जाता है। सांस्कृतिक अंतर और प्रत्येक परिवार की व्यक्तिगत ज़रूरतों के कारण यह सहयोग चुनौतीपूण एवं महत्वपूर्ण हो सकता है।

एक संस्था के रूप में परिवार सार्वभौमिक संस्था है। यह सभी सामाजिक संगठनों में सबसे अधिक स्थिर और फैलने वाला होता है। सभी समाज चाहे बड़े हों या छोटे, आदिम और सभ्य, प्राचीन और आधुनिक, सभी में किसी न किसी रूप में परिवार अवश्य पाया जाता है। यह अनुमान लगाना सुरक्षित है कि परिवार किसी न किसी रूप में हमेशा हमारे साथ रहेगा। भविष्य के संबंध में, जैसा कि मन कल्पना कर सकता है, परिवार समाज का एक कें ीय और वास्तव में एक परमाणु घटक बना रहेगा। परिवार एक छोटा समूह होता है जिसमें आम तौर पर पिता, माता, एक या अधिक बच्चे और कभी-कभी निकट या दूर के रिश्तेदार होते हैं। इसके अलावा, विद्यालय एक सामाजिक वातावरण है, जहाँ बच्चे अपने सहपाठियों के साथ बातचीत करते हैं, सहयोग करना सीखते हैं और जीवन के लिए महत्वपूर्ण कौशल विकसित करते हैं। इसलिए, यह आदर्श है कि पूरा विद्यालय समुदाय इस सामूहिक शैक्षिक प्रक्रिया में भाग लेने के लिए मिलकर काम करता है। परिवार एक बहुआयामी संरचना है, जिसमें माता-पिता द्वारा घर और स्कूल में

अपने बच्चे की शिक्षा में सहयोग करने के तरीके शामिल हैं। परिवार में माता-पिता की भागीदारी प्राथमिक विद्यालय से लेकर माध्यमिक विद्यालयों तक की आयु सीमा में सकारात्मक परिणामों में योगदान देखने को मिलता है।

परिवार समुदाय का सबसे उभरता हुआ मौलिक समूह है। यह समाज का सरल प्राथमिक समूह तथा सामाजिक समूहों में सबसे बुनियादी सूमह होता है। परिवार एक ऐसा सामाजिक वातावरण है, जिसमें एक बच्चा पैदा होता है। इसके अलावा, समाज में व्यक्तियों के जीवन को प्रभावित करने वाले सभी समूहों में से कोई भी उनसे इतनी निकटता से या इतनी निरंतर संपर्क नहीं करता है जितना कि परिवार करता है। परिवार जन्म से लेकर मृत्यु तक एक निरंतर प्रभाव दिखाता है। परिवार वह पहला समूह है, जिसमें हम खुद को पाते हैं। यह किसी न किसी रूप में सबसे स्थायी रिश्तेदारी के लिए उपाय करता है। हम में से हर एक व्यक्ति परिवार में ही पलता एवं बढ़ता है और हम में से हर व्यक्ति किसी न किसी परिवार का सदस्य होता है। परिवार समाज की मुख्य सामाजिक संस्थाओं में से एक है। प्राचीन काल से परिवार भारत में सबसे महत्वपूर्ण बाल देखभाल संस्थान रहा है क्योंकि बच्चों से परिवार के गौरव के तहत बढ़ने की उम्मीद की जाती है, जहाँ बच्चे का संतोषजनक पालन-पोषण सुनिश्चित होता है। मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा परिवार को समाज की स्वाभाविक और मौलिक इकाई के रूप में निर्धारित करती है। परिवार वस्तुतः एक सामाजिक संगठन या रिश्तों से बाहर पुरुषों और महिलाओं की एक इकाई है। परिवार का महत्व बच्चे को पारिवारिक माहौल में एक पूर्ण व्यक्ति के रूप में विकसित करने में निहित है। हमारी संस्कृति में यह एक पुरानी मान्यता रही है कि बच्चों ईश्वर का एक उपहार है जिसे भविष्य की सुबह के रूप में परिवार और समाज के भीतर देखभाल और स्नेह के साथ पोषित किया जाना चाहिए।

यह प्रसिद्ध कहावत है कि एक आरामदायक घर खुशी का एक बड़ा स्रोत है। यह स्वास्थ्य और अच्छे विवेक के तुरंत बाद आता है जैसा कि बायरन ने ठीक ही कहा है। प्यार भरे दिल के अलावा घर का कोई मतलब नहीं है। भारतीय परिवार प्रणाली में अंतर्दृष्टि प्रदान करके इस शोध के सैद्धांतिक ढांचे का वर्णन करना है। परिवार सामाजिक निर्माण की एक बुनियादी इकाई है, जिसकी सटीक व्याख्या समय-समय पर और संस्कृति से संस्कृति में व्यापक रूप से भिन्न हो सकती है। एक समाज परिवार को एक प्राथमिक समूह के रूप में कैसे परिभाषित करता है, और वह परिवारों से क्या कार्य करने के लिए कहता है, यह किसी भी तरह से स्थिर नहीं है। परिवार के बुनियादी प्रदर्शन उत्पादक, आर्थिक, पारंपरिक और शैक्षिक होते हैं; विभिन्न प्रकार से परिभाषित रिश्तेदारों के माध्यम से ही बच्चा पहली बार अपने समुदाय की संस्कृति को आत्मसात करता है।

माध्यमिक स्तर पर शिक्षा ग्रहण कर रहे अधिकांश बालक-बालिकाओं का दृष्टिकोण सामाजिक भावनाओं से प्रेरित होता है। यह शिक्षा आर्थिक एवं सामाजिक नियोजन का भी कार्य करती है। इस स्तर पर शिक्षा के माध्यम से बालकों के नैतिक गुणों के महत्व का समझाकर

बालकों के व्यक्तित्व में शामिल करना होगा। इसी उम्र में उसे अच्छे और बुरे का भेद कराकर उसे उच्च शिष्टाचार सिखाकर उसके नैतिक गुणों का विकास एवं उसे भविष्य के नागरिक बोध के लिए तैयार किया जा सकता है। बालक में नैतिकता, परोपकार, न्याय, सत्य, आचरण आदि उच्च मूल्यों के प्रति स्थायी भाव जागृत करने के लिए "मूर्त से अमूर्त", "स्थूल से सूक्ष्म", "सरल से विशेष" आदि नियमों का पालन करना चाहिए। इन उद्देश्यों के लिए बालकों को अत्यन्त लोकप्रिय महापुरुषों की कहानियों, जीवन वृत्तांत आदि सुनाना चाहिए। इससे उच्च आदर्शाे एवं नैतिकता के प्रति संवेगात्मक सम्बन्ध स्थापित हो जाएगा जो स्थायी भाव उत्पन्न करने में सहायक होगा।

इस दृष्टि से माध्यमिक स्तर की शिक्षा में बालक की वह आयु आती है, जो कुछ करने तथा अपने को स्थापित करने पर प्रयास करता है। इस दृष्टि से वर्तमान शिक्षा प्रणाली में माध्यमिक स्तर काफी महत्वपूर्ण है। निम्न वर्ग के परिवार का वातारण अभावों भरा होता है। बालक-बालिकओं में नैतिकता का विकास कम विकसित होता है। बालकों मे उत्तम संस्कार एवं मूल्यों के विकास पर परिवार के वातावरण व सुसांस्कृतिक घरेलू वातावरण का प्रभाव पड़ता है। परिवार का अच्छा वातावरण बालक में नैतिक विकास करने व उनकी शैक्षिक उलब्धि बढ़ाने में सहायक होता है। समाज को उससे बहुत अपेक्षाऐं होती है। आमतौर पर माध्यमिक स्तर के छात्र किशोरावस्था के होते हैं। विकास के इस चरण में लड़के और लड़कियां शैशवावस्था से किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं। चूंकि यह चरण शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक परिवर्तन उनके जीवन में विभिन्न समस्याओं को आमंत्रित करता है, वे अपने परिवार, समाज और स्कूल के माहौल के साथ ठीक से समायोजित होने में विफल रहते हैं। यदि किशोरावस्था की जरूरतें ठीक से पूरी नहीं होती हैं तो वे विभिन्न समस्याओं-मानसिक जटिलता, संघर्ष और चिंता से ग्रस्त हो जाते हैं। ,

नैतिक विकास वह प्रक्रिया जिसके द्वारा लोग सही और गलत की अपनी समझ विकसित करते हैं और कैसे वे उनके बीच चुनाव करते हैं यह एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें दृष्टिकोण, स्वभाव और संज्ञानात्मक दक्षताओं का अधिग्रहण शामिल है। नैतिक विकास बचपन से वयस्कता तक नैतिकता के उद्भव, परिवर्तन और समझ पर केंेित है। नैतिक विकास व्यक्ति के जीवन भर के अनुभवों, व्यवहार और शारीरिक और संज्ञानात्मक विकास की विभिन्न अवधियों के दौरान नैतिक मुद्दों का सामना करने से प्रभावित होती है। नैतिक विकास व्यक्ति के सही और गलत के बारे में सुधार की भावना से संबंधित है, यही कारण है कि छोटे बच्चों में वयस्क की तुलना में अलग-अलग नैतिक निर्णय और चरित्र होते हैं। नैतिक विकास अक्सर अपने आप में "सही" या "अच्छाई" का पर्याय बन जाती है। यह एक विशिष्ट आचार संहिता को भी संदर्भित करता है जो किसी की संस्कृति, धर्म या व्यक्तिगत दर्शन से ली गई है जो किसी के कार्यों, व्यवहारों और विचारों का मार्गदर्शन करती है।

नैतिक विकास ''सही और गलत के मामलों से संबंधित भावना'' है। ऐसी भावना में शर्म, अपराधबोध, शर्मिंदगी और गर्व शामिल हैं। शर्म का संबंध अपने साथियों द्वारा अस्वीकृति से है, अपराधबोध का संबंध खुद की अस्वीकृति से है, शर्मिंदगी का संबंध लोगों की नज़रों में अपमानित महसूस करना है और गर्व एक ऐसी भावना है जो आम तौर पर अपने साथियों द्वारा प्रशंसा किए जाने पर खुद के बारे में सकारात्मक राय रखने से पैदा होती है। नैतिक विकास के संदर्भ में नैतिकता और इसके विकास को समझाने की कोशिश करता है कि यह कैसे पहली बार में मनुष्यों के लिए विकासवादी राय में नैतिकता और नैतिकता का होना विरोधाभासी लग सकता है। विकास में कई मान्यताएँ और भाग हैं लेकिन जैसा कि आमतौर पर देखा जाता है, यह सबसे योग्य का अस्तित्व है। यह व्यवहार आपके जीन को आगे बढ़ाने की इच्छा से प्रेरित है। चाहे इसका मतलब स्वार्थी होना हो या अपने बच्चों की देखभाल करना हो, बस यह सुनिश्चित करने के लिए कि आपके जीन जीवित रहें। यह नैतिकता और नैतिकता के साथ संघर्ष प्रतीत हो सकता है, हालाँकि हम तर्क देते हैं कि यह संबंधित हो सकता है और नैतिकता और नैतिकता होना वास्तव में एक ऐसा कारक हो सकता है जो विकास के सिद्धांत में योगदान देता है। इसके अतिरिक्त, मनुष्यों ने समुदाय और एक सामाजिक जीवन शैली विकसित की है जो नैतिकता विकसित करना आवश्यक बनाती है।

आवश्यकता एवं महत्व -परिवार एक बहुत ही लचीला और सरल संस्था है। परिवार की संरचना निश्चित नहीं है, यह विभिन्न संस्कृतियों और विभिन्न अवधि में भिन्न होती है। परिवार एक बड़े, आत्मनिर्भर समूह)संयुक्त परिवार (से एक निश्चित और छोटे समूह)एकल परिवार (में तब्दील हो गया है। संयुक्त परिवार में प्रेम, सहयोग, सहनशीलता, अनुशासन, निष्ठा, उदारता, त्याग, सेवाभाव और आज्ञाकारिता तथा जीवन के ऐसे अन्य गुणों का वातावरण होता है जो हमारे जीवन के लिए बहुत सहायक होते हैं। लेकिन औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के कारण एकल परिवार का गठन किया जाना चाहिए, जहाँ बच्चे माता-पिता के अधिक करीब हो सकें और अपनी समस्याओं पर खुलकर चर्चा कर सकें। ऐसी स्थिति में इस कार्य या शोध को करने की आवश्यकता है।

उद्देश्य-

1. एकल एवं संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण एकल एवं ग्रामीण संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास का अध्ययन करना।

3. शहरी एकल एवं शहरी संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं -

1. एकल एवं संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. ग्रामीण एकल एवं ग्रामीण संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. शहरी एकल एवं शहरी संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध-प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन के लिए सर्वेक्षण-विधि का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जनपद स्थित माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को शोध की जनसंख्या माना गया है। कुल 600 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में दैव निदर्शन विधि से चयनित किया गया है, जिसमें से ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के 300 विद्यार्थियों तथा नगरीय माध्यमिक विद्यालयों के 300 विद्यार्थियों को चुना गया है। प्रस्तुत अनुसंधान में यादृच्छिक न्यादर्श का चयन किया गया है। माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में नैतिक विकास का मापन करने के लिए शोधकर्ता द्वारा नैतिक विकास को मापने हेतु डॉ0 अल्पना सेन गुप्ता एवं डॉ0 अरून कुमार सिंह द्वारा निर्मित ''मोरल वैल्यू स्केल' का प्रयोग किया गया है। नैतिक मूल्य मापनी में कुल 36 प्रश्न दिये गये है एवं उन्हें चार खण्डों में विभक्त किया गया हैं-झूठ, बेइमानी, चोरी करना, धोखेबाजी। प्रत्येक खण्ड में 9 कथन दिये गये है एवं प्रत्येक कथन के लिए दो बिन्दु मापनी 'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर देना है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या-

उद्देश्य-1 एकल एवं संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास का अध्ययन।

H_{01} एकल एवं संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका सं0 1

एकल एवं संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-अनुपात

क्र0सं0	लिंग	न्यादर्श की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमानों का अन्तर	मानक त्रुटि	टी -मान
1	एकल परिवार	300	26.39	4.34	0.03	0.36	0.08
2	संयुक्त परिवार	300	26.36	4.39			

उपर्युक्त तालिका में, गणना की गई एकल एवं संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास का मध्यमान क्रमशः 26.39 एवं 26.36 है जबकि दोनों की प्रमाणिक विचलन क्रमशः 4.34 एवं 4.39 है। दोनों के बीच टी-अनुपात का मान 0.08 है। टी-तालिका में 298 स्वतन्त्रता-अंश के लिए 0.05 पर दिये गये मान से कम है। इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। इस प्रकार, एकल एवं संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात् दोनों परिवारों के मध्य विद्यार्थियों के नैतिक विकास में समानता है।

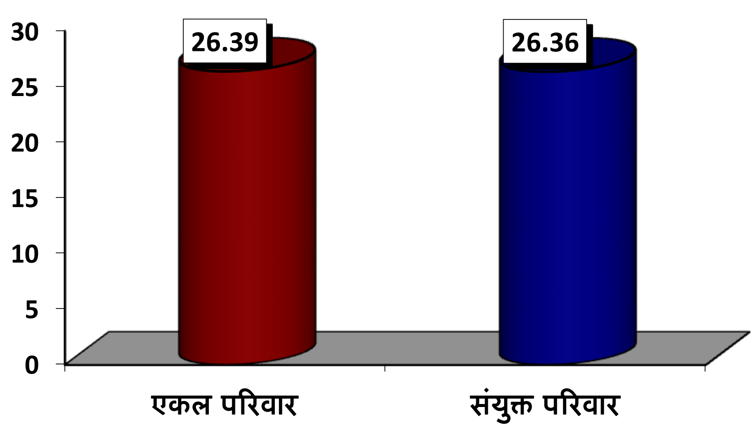

उद्देश्य-2 ग्रामीण एकल एवं ग्रामीण संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास का अध्ययन-

H_{02} ग्रामीण एकल एवं ग्रामीण संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका सं0 2

ग्रामीण एकल एवं ग्रामीण संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-अनुपात

क्र0सं0	लिंग	न्यादर्श की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमानों का अन्तर	मानक त्रुटि	टी -मान
1	ग्रामीण एकल परिवार	150	26.41	4.06	0.07	0.37	0.19
2	ग्रामीण संयुक्त परिवार	150	26.34	4.85			

.05 स्तर पर असार्थक

उपर्युक्त तालिका में, गणना की गई ग्रामीण एकल एवं ग्रामीण संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास का मध्यमान 26.41 एवं 26.34 जबकि प्रमाणिक विचलन क्रमशः 4.06 एवं 4.85 है। दोनों के मध्य टी-अनुपात का मान 0.19 है। टी-तालिका में 298 स्वतन्त्रता-अंश के लिए 0.05 पर दिये गये मान से कम है। इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। इस प्रकार, ग्रामीण एकल एवं ग्रामीण संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। नैतिक विकास को चित्र संख्या-2 में दर्शाया गया है।

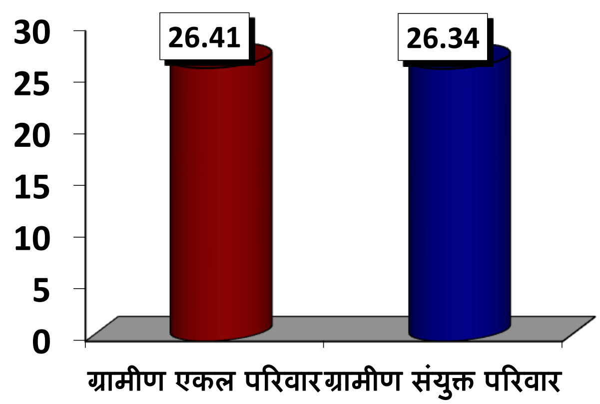

उद्देश्य-3 शहरी एकल एवं शहरी संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास का अध्ययन-

H_{03} शहरी एकल एवं शहरी संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका सं0 2

शहरी एकल एवं शहरी संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-अनुपात

क्र0सं0	लिंग	न्यादर्श की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमानों का अन्तर	मानक त्रुटि	टी -मान
1	शहरी एकल परिवार	150	23.28	4.16	3.60	0.47	7.59
2	शहरी संयुक्त परिवार	150	26.34	4.05			

.05 स्तर पर सार्थक

उपर्युक्त तालिका में, गणना की गई शहरी एकल एवं शहरी संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास का मध्यमान 23.28 एवं 26.88 जबकि प्रमाणिक विचलन क्रमशः 4.16 एवं 4.05 है। दोनों के मध्य टी-अनुपात का मान 7.59 है। टी-तालिका में 298 स्वतन्त्रता-अंश के लिए 0.05 पर दिये गये मान से कम है। इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। इस प्रकार, शहरी एकल एवं शहरी संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास में सार्थक अन्तर है। शहरी संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में नैतिक विकास शहरी एकल परिवार के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है। नैतिक विकास को चित्र संख्या-3 में दर्शाया गया है।

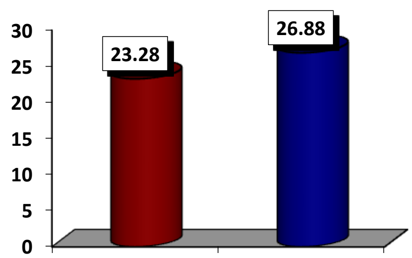

निष्कर्ष-

अध्ययनोपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये-

1. एकल एवं संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात् दोनों परिवारों के मध्य विद्यार्थियों के नैतिक विकास में समानता है।
2. ग्रामीण एकल एवं ग्रामीण संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक विकास में अन्तर नहीं है।

3. शहरी संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में नैतिक विकास शहरी एकल परिवार के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।

सुझाव-

मानव जीवन में परिवार एक ऐसी संस्था होती है जहाँ मानव के जन्म से ही संस्कार एवं मूल्यों का संवर्द्धन होना प्रारम्भ हो जाता हैं बच्चे जन्म से ही अपने परिवार में होने वाले संस्कारों, धार्मिक, सामाजिक क्रिया-कलापों को सीखता है। वही परिवार यदि संयुक्त है तो उसमें दादा-दादी, माता-पिता, भाई-बहन एवं अन्य सम्बन्धित परिवारों के साथ रहते हुए नैतिक मूल्यों का संवर्द्धन करता है लेकिन वही यदि एकल परिवार में बच्चा है तो वह केवल माता-पिता एवं भाई-बहन द्वारा कृत नैतिक मूल्यों को सीखता है। पारिवारिक वातावरण में लोग एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करना, बात मानना, एक-दूसरों को महत्व देना इत्यादि नैतिक मूल्यों का संचरण होता है। वहीं दूसरी तरफ आज बढ़ती हुई भौतिकता एवं बेरोजगारी के समय में परिवार टूटते जा रहे है और एकल परिवार में वृद्धि हो रही है जिससे परिवार में कम सदस्य होने के कारण बच्चा नैतिक मूल्य कम सीख पाता है वहीं एक-दूसरे से किस तरह बातचीत करना है या किस प्रकार का व्यवहार करना है बच्चे नहीं सीख पा रहे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अरोड़ा, रीता एवं मारवाह, सुदेश (2007), शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी अध्ययन, शिक्षा प्रकाशन, जयपुर,राजस्थान।
- पाठक पी.डी. (2007) शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- पाण्डेय के.पी (2006) "शैक्षिक अनुसंधान" विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
- भटनागर सुरेश (2009) शिक्षा मनोविज्ञान, लायन बुक डिपो, मेरठ।
- शर्मा आर.ए (2009) शिक्षा अनुसंधान, आर लाल बुक,डिपो मेरठ।
- अस्थाना रामनारायण व अस्थाना (1990), मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन , विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- कपिल एस.के (2015) अनुसंधान विधियां, एच.पी भार्गव बुक हाउस, आगरा।

Disclaimer/Publisher's Note:
The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.